IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, February 2020 Impact Factor: 4.819

# iepUn iol ;x d miU;kIk e fgUn&efLye lEcU/k

**M,- mn;Hkku ;kno**

**vfILVV ikQIj] fgUnh**

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

उपन्यास के विकास के लिए जिन स्थितियों–परिस्थितियों की आवश्यकता थी, भारत में वे औपनिवेशिक शासन के पश्चात अस्तित्व में आई। तत्कालीन परिवेश और परिस्थितियाँ ऐसी रहीं, कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर आगामी लगभग सत्तर वर्षो तक हिन्दी के पाठक–वर्ग की निर्माण प्रक्रिया बहुत धीमी रही। परन्तु तत्पश्चात उपन्यास साहित्य की श्री वृद्वि हुयी।

प्राचीन काल से ही भारत की संस्कृति सामासिक रही है। यहाँ पर समय–समय पर विभिन्न धर्मो का अभ्युदय व आगमन होता रहा है। इसलिए भारतीय साहित्य भी सामासिक हो रहा है। यह बात अलग है कि अलग–अलग समय में अलग–अलग विधाएँ प्रभावी रही है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को प्रभावी कर रही हैं। साहित्य का ध्यान उस तरफ अधिक जाता है, जो आज हमारी समस्या बनती जा रही है।

आज की समस्याओं में एक बड़ी समस्या साम्प्रदायिकता की है। साम्प्रदायिकता एक ऐसी समस्या है जो पूरे विश्व को प्रभावित कर रही है। कहना न होगा, कि विश्व का मानव समाज एक नया आयाम पैदा कर रहा है। परन्तु यह विकास केवल वृद्वि का विकास है, विज्ञान का विकास है, भौतिक संसाधनों का विकास है। वह विकास मानवीय सम्बन्धों का विकास नहीं है। विश्व के मानवीय सम्बन्ध बहुत कुछ धर्म से प्रभावित होते रहे हैं और आज भी प्रभावित हो रहा है। यहीं से जन्म हुआ है साम्प्रदायिकता का। जबकि धार्मिक होना और साम्प्रदायिक होना दोनों अलग–अलग बातें हैं। परन्तु आज साम्प्रदायिकता का जन्म धर्म के गर्भ से किया जा रहा है। जो पूरे विश्व की एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। वह मानव समाज को परमाणु की खोज कर रहा है जो विज्ञान के रहस्यों को सुलझा रहा है, वहीं मानव साम्प्रदायिकता जैसे अभिशाप का वाहक कैसे बना हुआ है यह चिन्ता का विषय है।